6399

294.5
R 37 B.

Raj kumar

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6399.

RANBIR LIBRARY
No 3048
JAMMOO

भजनमाला

بھجن مالا

बाबू राज कुमार देव नन्दन सिंह कृत

जिसमें

अज्ञा विनाशिनि शर्वार्धाङ्ग निवासिनि सृष्ट्युत्पत्ति स्थिति
लयकारिणी श्री राजराजेश्वरी आद्या महारानी का जगदानन्द
चरित्र और श्री पार्वत्यङ्गजा दुर्गा भगवती का सप्तशत्यन्त-
र्गत सगुण निर्गुण चरित्र सुन्दर भजन और रागों में श्रीयोग
मायानुरागियों के आनन्द निमित्त वर्णित हैं

वही प्रथमवार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

फेब्रुअरी सन् १८८९ ईसवी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

संक्षेप दुर्गा यानी एक अध्याय का अर्थ एक श्लोक में किया गया है॥

अ०१ भानोर्बिम्बप्रभासोत्सुरइव सुरथःसानुभावेन
यस्या दैवं कार्य्यं विधातुं यदि भवति समा विष्कला सा-
पि नित्या विख्यातोत्पत्तिरेषा जगति जलमये बोधना-
र्थाय शौरे हन्तुं करोऽङ्ग्वौ यां विधिरनिशमनौत क-
ल्प्यते सैव दुर्गा ॥१॥

अ०२ दृष्ट्वा सैन्यं स्वकीयं विजितमथ शक्रं तच्चाधिपत्यं
सुराणां गत्वा देवप्रभीशौ निज चरितमिदं दानवैर्निर्जरा-
स्ते। व्याजन्नु श्चैतयोर्निःसृतमथ सुरहत्तेज आसीत्त्य-
रेषा भूत्वा नारी तदा तत्त्वरितमसुरराण्मिस्तया धानि भूयः२

अ०३ सेनानीश्चिक्षुरोऽसौ विनिहतमखिलं सैन्य
मेतन्मदीयं इत्यालोक्याथ देवी निशित शर निपातैः
समाच्छादयत्ताम्। क्षिप्त्वा सापी सुरास्वेत्तदपि तमवधी
द्देवमेवा सुरेन्द्रः आकर्ण्यैतद्धधं चागतऽह महिषे प्रो
ष्य यानीति देव्या ॥३॥

अ०४ तस्मिन्नत्युग्रवीर्य्ये निधनमुपगते भूरि भीतिं
ददाने। तां देवी तुष्टुवुस्ते निखिल सुरगणा हर्षिताः
पूर्णकामाः येभ्योऽभीष्टं च दत्त्वा वरमतुल महो-

पूजिता याच भूयस्तस्या स्त्रोत्र प्रभावं कथमपि सकलं प्रागदत्कौतुकामान् ॥४॥

अ०५ शुम्भश्चैवन्त्रि शुम्भसुरपतिमथ जित्वा तथान्यानदलीषुः । आजेन्द्रे यज्ञ भाक त्वं सकलमधि कृतं यत्पुरासीत्समन्तात् । स्तुत्वा देवा वरं स्वं नरापति निकटेतुष्टुवु र्विष्णु मायाम् । चण्डो दूतश्च यस्यास्तदसिदनुज राजस्य कामश्च चक्षे ॥५॥

अ०६ दूतः कोपेन देव्यास्तदुदित वचनं दानवेन्द्राय सम्यक् । आचख्यौ शीघ्रमेतत्प्रकुपित दितिजे प्रास्त दातं जगाद । केशग्राह्यत्ता मानयसइति तदाकृष्यमानं तदुक्तिं । हूंकारेणौवच्चान्यं त्रिभुवनजननी भस्मसात्तच्चकार ॥६॥

अ०७ आजग्मौ चण्डमुण्डौ विहसित वदना सिंहसंस्थां च दृष्ट्वाश्वादातु प्रोद्यतौ चेद हह सपदि कोपेन भीमा विरूपा । काली भूता कराला त्रिभुवन जयिनी संवधेनैतयोस्सा । चामुण्डे तीह लोके पुनरपिच तदानी मतस्याबभूव ॥७॥

अ०८ छिन्ने सैन्ये समस्ते निधनमुपगते चण्डमुण्डे सुरेशः । आहूय प्रोय दैत्यान्समदि प्रादश युद्धाय जाता स्तदाते । देवानां शक्तयस्तद्द्विविध सकल रूपं तथा प्राप्य भूयाम । दैत्यानां रक्तविन्दून शदनुज

समस्तान्समाजन्धुरेता: ॥८॥

अ॰९ तन्माहात्म्यञ्च देव्या विदितभुवनियात्तो सु-
हृ: श्रोतुमैच्छत्त विधिं स्नेरतावीजेमहदत्तकुपित:
शुंभएवन्निशुंभ: आयातोहन्तुमेनांसम भवदीत्त
युद्धं तयोर्भीमकारं। क्रुद्धाऽतीवाऽम्बिका साहृदि-
निजगदया सम्विदार्य्योऽवधीत्तं॥९॥

अ॰१० भ्राता प्राणोपवरो मेहत इति नितरां किं
त्वयानैव युक्तं किं त्वंन्यासाम्बले नाति पृथ वलम
वाप्या त्र्ययुद्धयुक्ती इत्युक्ते चैव शुंभे त्रिभुवनजननी
दर्शयित्यात्मतन्वा मेकत्री भूय संस्था अथ॰ चत्त म-
वधीदेकता माप्य देवी ॥१०॥

अ॰११ देव्या दैत्येप्रपूज्ये हनन मुपगते तुष्टुवु:
सांगदेवा:। येभ्यो दत्तं वरं तत्सकल सुखकरं वां-
छितार्थं ददानम्। हर्षोत्फुल्लान नास्ते निहत रिपु
गणा: सृष्टि रक्षादि कारीम्। काली कात्यायनीं
तामवनि स लिल रूपाञ्च नारायणीस्वै॥११॥

अ॰१२ स्तोत्रेणानेन नित्यं किल विमल मना-
स्तौति यो मात्र पत्त्यां। नो दारिद्र्यं कदाचिद्भयमपि
न्तपत्तो दस्युतो वान्य केन। तन्माहात्म्यं मदीयं क-
थमपि पठतस्तस्य नैवास्ति किंचित्। देवी वाक्यंच
सर्व्वंत दिति विनयतो सर्व्वलोकेपुणपूवत्त ॥१२॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ॰ १३ देवी माहात्म्य मेतत्सकलमभिहितं राज्ञ वोधाय सम्यक्। दत्वा भीष्टं ततस्सा वरमखिलमिदं वैपूर्य वर्य्यस्य राज्ञ: ।एवं तस्यापि तद्वत्तवर सुरथ महीपालकस्यापि नूनं। भक्त्या ताभ्यांच देवी किल सम भवदन्तर्हिता स्तूयमाना ॥ १३॥

संक्षेप दुर्गा मूर्त्ता हुई

श्रीगणेशायनमः

अथ भजनमाला

श्लोक

नत्वा देवीं दशविधां गणेशार्के हरिंशिवम्। लोकानाम्भुक्ति मुक्त्यर्थं क्रियते गीत मालिकाम्॥१॥ ब्रह्मराज कुलोद्भूता देवनन्दन संज्ञकः वासःशिवहराख्येच सत्कुले कुलदीपकः ॥२॥ सीता यत्र समुद्भूता तीरभुक्देशपावनः तत्रराज्यस्वग्रामंच वागवती यत्र विश्रुता ॥३॥ वागवत्या पूर्व दिग्भागे क्रोशैके च मनोहरे शिवेन निर्मिता चैषा सुन्दरी चाति सुन्दरी॥४॥ कृत्वाच पुरनिर्माणं शिवो पूर्वदिग्भागतः देवकुल्यानिवासोभूद् तो शिवहरः स्मृतः॥५॥

दोहा

ब्रह्मराज कुलभूत तन देवनन्दन मम नाम।
पावन मिथिला देश में हस्थिति शिवहर ग्राम॥१॥

प्रान्त लोग के हर्ष हित रचौं गीत की माल ॥ १॥
लीला शोभा शान्ति कर सुनत हरै अघ जाल ॥ २॥

कबित्त

बन्दो श्री काली पद कमलोंते अधिके लालेजाको ज-
ग प्रान्त लोग देवी रूप ध्याये हैं। कहत गणेश गा-
णपत्य अरु शैव सदा शंकर अविनाशी सुख राशी
कहि गाये हैं। जाको ध्यान विष्णु करि ध्यावत दुखवै-
ष्णव लहि दुर्ल्लभ सुख गाको ब्रह्मादिक सिहाये
हैं। कहत सौर सूर्य्य जाहि देव सुवन वेदज्ञ को
पांच तत्व एक पंच देव ठहराये हैं ॥ १॥

छप्पै

पंच देवता ध्याय बहुरि इनके जो जन हैं निज निज
रूप न्हि चरण कंज जाके अलि मन हैं सब कहें क-
रौं प्रणाम जासु अनुकंपा पाई लहि काली पद भ
क्ति जाहि सेवत सुख छाई पुत्र पौत्र यश विभव
जन जासु कृपा निज गृह भरौं तासु चरित पुनि अष्ट
पद विरचि गीति माला करौं ॥ १॥

अथ भजन

राग भैरो ताल जल्द तेताला

जै जै काली कल्याणी तूं कमला सन सेवित माया
अलय अखिल ब्रह्माण्ड लोक सुरपत भीत उपिजाया १ ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जबजब गाइ धस्यो बसुधाको दुख असुअर पाया
गाय सन्त सुर आरतबानी तुमको टेरि सुनाया ॥ १॥
तबतब बपु अनेक धारण करिहनि के दनुजनिकाया
सुखी करत सुर साधु बिप्र महि बिमल सुयश जग २
छाया ॥ ३॥ एक बार बिनु जल महि ऊपर अतिहि
दुकाल सताया चाहि प्राल्द सुरटेरि सुनायो तुरत-
हि कीन्ह सहाया ॥ ४ ॥ शाक रूप होइ प्रगट भई
जगस्वाद अमीरसपाया देव सुवन सतसम्वत लौंत-
बप्राके भरीकहाया ॥ ५ ॥

१ राग काफ़ी ताल तेताला

सकल पदारथ पायो तबते सुत बित नारि राम सुर
जत प्रभु बिबिध भाँति सुख छायो ॥ १॥ ज्ञान
मान बिद्या कबिताई पद के बोध लखायो अन्तर
बाहिर हरत कलिकल्मष दुख के पुंजनशायो ॥ २॥
जबते शरण गत काली के जानि असे पद आयो दे
वसुवन काली प्रसादतें अतिआनन्द अभायो ॥ ३॥

२ राग झंझोरी ताल तेताला जल्द

तुअंघर के मैं सदा दास हूं यों जन्म फल पायमा
तजू १ असित नौमि सुल मास अहैं तिथि कर्के
लगनबुधवार जीव नखत अरु मनु पतिप्रापि हैं
तनके सुख दातारमानजू २ पंचम गुरु तिसरों दैन पति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं मङ्गलबुधके साथ योग सुसिद्धि दूसरे कबिहैं बहुधन सुख दैहाथ माथजू ३ अष्टम राहु मित्र ग्रह सह शनि दोष करणा नहिं पैहैं तव पद कमल प्रसाद शंभु प्रिय सब सुन्दर सुख ह्वैहैं मातजू ४। अति हर्ष बिचार करत शुभ गुणसो सुरनन्दन फलपाय चिरंजीवा मुरहै बिभवयुत सब जनको सुख दाय मातजू ॥ ५ ॥

३ राग भैरवी ताल तेताला

जय जय जगदम्ब अम्ब सेवत सुर मुनि कदम्ब यावत मन काम नाम लेत कालिका १ तारा पद भजत जेइ भव को तरिजात तेइ बन्दौं छिन्नमस्ता पद शत्रु घालिका २ कमला को ध्यान धरत दारिद को खानि हरत भरत भुवनेश्वरी भव प्रणत पालिका ३ बगला पद प्रीति करत दुष्टन बल बुद्धि हरत धूमावति अरि उच्चाटि असुर घालिका ४ मातङ्गी को चरण ध्याय मूरुष मति बिमल पाय त्रिपुर सुन्दरि कहत जाय अघ त्रिकालिका ५ भैरवी भयहरणि मात देव सुवन शरण जात बिमुखन को करहु घात हित दयालिका ॥ ६ ॥

४ राग सोहनी ताल जत

कालीनाम भनो मन मूरुख क्यों आशा नर को करता

सब सुख भानिहराति दारिद्दुख आश पद तजि कों जगरता १ वेद पुराण शास्त्र बहु पढ़ि पढ़ि तीरथ करिकरि श्रम भरता नाहक सकल ब्रह्म विद भाषत जो काली पद मन नरता २ करि सत संग भजो काली पद क्यों चयतापहिं परिजरता कामधेनु चिन्तामणि सुरतरु काली सम न बिभवधरता ३ इन्द्र सब के जब निकट जात नर तब मांगो सब फल फरता बिन मांगो सबहां चा रो फल कालि कृपा जनगृह भरता ४ दासि ठस्स औरनहिं दूसर कोउ कालीतजि लखि परता सु रनन्दन अस समुझि देव मुनि काली पद तजि नहिं टरता ॥५॥

५ राग काफी ताल जल्द तेताला

आनन्दी के भजन बिना नर नाहक जन्म गंवा-योरे आनन्दी के भजन करत पिय अधिनाशी पद पायोरे १ आनन्दी आनन्द दायिनी वेद बि-मल यश गायोरे सो तजि मूढ़ फिरत क्यों घर घर फिर दुख भार चढ़ायोरे २ करि विश्वास भजो आनन्दी जो गुरु ध्यान लखायोरे सहनहिं मिटै स-कल दुख तेरो लहि सुख विभव अघायोरे ३ अष्ट सिद्धि नव निधि चारि फल आनन्दी कर ल्यायोरे

सोनिज भक्तन्ह भवन भोत है देव मुकन्द मुनि गायोरे ॥

६ रागपीलू ताल तेताला

भजिले नर अज्ञानी सदा दुर्गा बरदानि आदिशेष प्रकृति सब भुवन ख्यात यस नाम हरत अघ अवगुण खानि १ जो नर भक्ति सहित तिहि पूजत शारद कालवार्षिक अनुमानि सकल कामना सोजन पावत साम वेद गुण विपुल बखानि-भ-२ यह भवजलधि पारजो चाहत सोउ सेवत चारु बानी नारद शारद हरि चतुरानन सिद्धि लहे सेवत घृत बरानी-भ-३ पुत्र पौत्र धन बढ़ि निश्च जगदम्बा जिवजानी प्रेम सहित सुरनन्दन सेवत लेत अमर घर सुख जड़ प्रानी-भ-४

७ रागपीलू ताल तेताला

आनन्दो के भजन करो नर क्यों भ्रम संग लपटायोरे अघरण को शरणागत देनी श्रुति भ फन्द करायोरे १ रहो सदा आनन्द भान में जोह ना लहि सदायोरे जासु प्रभाव ज्ञान उर उपजे अघ के ओघ खदायोरे २ याद करो जब गर्भ बास में सुधाल धानु लदायोरे तहं को रक्षक पठायो तेरो अब क्यस नाहि रदायोरे ३ आनन्दी पद छिनक न बिसरो रहो भान सपदा योरे देव मुकन्द सुयोनि पद पायो मनामन

जगनजहा थोरे ॥ ४ ॥

८ रागबागो झपतालधीमा तेताला ॥

जै वाराही ब्रह्माणी बागेश्वरि हरिमाया श्री भ वानि भय को हरनि भीमा रिपु चामुंडा करनि जन हि- त भवजलधि तरनि केवल प्रभु जाया १ लक्ष्मी अरु उमा नाम ललिता कहि आठो याम चारो फल निज भक्त धाम करत अमल काया २ काली जग पाली खल घाली रिपुहाली मातु पातु सब ठांई देवसुवन प्रणता आया ॥ ३ ॥

९ राग झंझोटी ताल झपताला

कोटिन अपराध मेरो क्षमा करो जगत मातु जास्त- पाभवानी तुही दयावन्त कृपावन्त माया वन्त सदा करुणा कारि जानो निज दास तू दयानी १ जेते जग जीव जाल उपजत तुव अंग माल तेरोई प्रसाद यश गावत बाक बानी २ देवसुवन दास तेरो करुणा हम को रहेरो जानो निज चेरो मातु शं करी भुवानी ॥ ३ ॥

१० राग ईमन ताल तेताला

भनु मन काली सब सुखदानी शुंभ निशुंभ हन ने वैरिन दुर्गा भाल मांहि प्रगटानी १ तेज प्र- ताप कहां लगि कहिये यश गावत श्रुति बानी ।

दुर्गा सरिस प्रभाव सकल जग बुध बिधि बिबुध बखानी २ काली रूप सकल जगजालहु उमार-मा प्रतानी सुरनन्दन को देहु भक्ति निज जन जा-निये महरानी ॥३॥

११ राग सोहनी ताल आड़ा तेताला

नमौं प्रकृतिस्वरूप भवानी सृष्टि प्रसिद्ध उनहिं तें जाई प्रकृति नाम ताते श्रुति गाई त्रिगुण भई तन तीनि बनाये बिधि हरि हर होये जग ठपि लाये परमा-त्मा कृपा जग जानी तिन्ह के बाम अंग ठकुरानी १ अग्नि माहिं दाहक गुण जैसे पुरुष शरीर प्रकृति रह तैसे ताते यही ब्रह्म मय देखै थिर जंगम सब करि अवरेखै करौं सृष्टि जब मन निज आनी एकै पंच रूप प्रगटानी २ भक्ति मुक्ति अरु मुक्तिहि देनी परमधाम को नाम निसेनी सब जग ख्यात प्रभूत जा-हि के को बरनौ गुण बिभव ताहि के देव सुवन को निज जन जानी देहु भक्ति निज पद सिवरानी ॥३॥

१२ राग बिहाग ताल तेताला

गुप्त भलो यह भाई साईं काहू डर दरसाई १ जैसे मेंहदी पात में लाली रंग न देत देखाई पिसु गरे लाली नहिं पावै कोटिन करै उपाई २ पत्थर माहिं अनल के बासा चकमक के संग हाई करि बिचार

निज मन में देखो सांचो भाव ससाई ३ बिन काली पद प्रीति किये नर तन की तपनि नजाई देवसुवन सनकादि अभय पद पायो प्राप्ति सहाई ॥४॥

१३ रागविहाग ताल झप ताला

जयति जयति जगत जननि पंचदेव रूपा वैष्णव जन विष्णु बदत सेवत फल चारि लहत कहत श्रुति नेति नेति जासु गुण अनूपा १ सौर कहत सूर्य्य देव देवन पति गति अभेव सेवत पद कमल जासु मेटत भवधूपा शंकर करि शैव सदा सेवत सब सम्पदा लेत मन मान तरत जगत जाल कूपा २ शाक्त जन शक्ति ध्याय अर्थ धर्म काम पाय रहत संतत मन अघाय अन्त मुक्ति रूपा देवसुवन करत ध्यान गणपति गणेश मान जाके नाम भय विघ्न लहत विन्ध्य लूपा ॥३॥

१४ राग ईमन ध्रुपद ताल चौताला

कालिका पद लाल लाल करतल युग लाल लाल कुटें ध्याये जगत जाल गले शोभे हीरा लाल हृदय बीच मुंडमाल भाल लाल चंद्रिका के किरण लाल १ कर पद नख बिमल लाल मुद्रिका कन्ह की जोति लाल पायल दुति लाल कहे सुर सुवन देरि जो नर इन छबि को हेरि ताको नु करत निहाल सदा काली सुजनपाल२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

१५ राग बिहागड़ा ताल एकताला

जयति जयति जगत जननि कालिका भवानी धर-
णि भार हरण हेत प्रगटे ब्रजपति निकेत कृष्ण रूप
अति अनूप तीनि लोक जानी १ जब जब जग असुर
भरत काली तन बिबिधि धरत हरत भूमि भार यातु
धान मान भानी २ सोइ सुचरित जगत गाये अध
मौ गति बिमल पाये तीनि ताप छूट जाय स्रवण प-
रत प्राणी ३ देव सुवन हर्ष पूर्ण सेवत पद कमल धूरी
दीन्हो सुख भूरि मानु सेवक प्रिय गुजानी ॥ ४ ॥

१६ राग प्रबन्ध ताल सुर फाकता ॥

जय जय श्री मंगल चंडि को प्रकृति वदन ते प्रगट भ-
ई तन कलि कलमख हिं बिखंडी को १ सृष्टि माह
मंगल तन हेरी क्रोध रूप जगलय के बैरी ताते मंगल
चण्डि नाम भौ जन यम त्रास बिहंडी को २ जग स-
ब तिय मंगल दिन जानी पूजहिं तुमहिं काय मन
बानी पुत्र पौत्र धन बिभव लहत नर सुनन्दन सुख
मंडी को ॥ ३ ॥

१७ राग भैरवी सिन्ध ताल तेताला

मेरो मन काली कल न बिसारो काली कमलापति पद
देनी अघहरणि कैलाश निसेनी जो जन काली प्राण
निहारो ता को काली करत सुखारो १ तारा भव समुद्र

तें तारैं छिन्नमस्ता अरि वृन्द संहारैं कमला जन घर
विभव भरतु हैं भुवनेश्वरि सुख देत अपारो २ बग-
ला अरि अस्तंभनकारिणि भैरवि भक्त जनन्ह भय
हारिणि धूम्रावति रिपुगण उच्चाटै मातङ्गी अघ मा-
ल बिदारो ३ त्रिपुर सुन्दरी चरण मनाय तीनि का-
लके ताप नशाये जो सादर पद हृदय धरत जन ल-
हत कवित गति मति सुख सारो ४ यह दश विद्या
नाम उदारो जो नर हृदय कमल में धारो ताको यम
के त्रास छूटि गये सुरनन्दन श्रुति टेरि पुकारो ॥५॥

१८ राग पुरवी रेखता ताल तेताला

भजन करु कालि पद चोखे भुलो मति मूढ़ नर
बौरे १ जगत के सकल सुख झूठे कबहुं नहि जा-
हिंगे जौरे २ सदा मन ध्यान में राखो फिरो मति मो-
ह फन्दौ रे ३ कहै सुर सुवन दुख तेरा हरैंगी कालिका तौरे ४

१९ राग बिलावल ताल एक ताला

जपि जपि यमि योगी वृन्द विहसत तजि कोटि फंद
जागि जागि यामिनि जुरजासु नाम काली १ पावन
बर भुक्ति मुक्ति आवत नहिं पल बिमुक्ति वन्दित पद
देवनते विविध भाग्य भाली २ बरणत मुनि वरदि-
नेश शारदा सुरेस शेष के श अगणो श जाहि गु-
णगण यश जाली ३ ताके पद कंज बीच विलसत

नित विनय युक्त देव सुवन चितचाहि चंचरीक पाली ४

२० राग भैरवी सिन्ध ताल तेताल्ला

करु रे मन मधुप सवेरा काली पद कंज सेडेरा १ दार
बार सम भावन मानो निशि दिन करहु बसेरा २ शि
व सनकादि आदि सुर सेवत पावत सिद्धि घनेरा ३
उत्तर कौन करोगे पांवर करिहैं जब यमु रोरा ४ देव सु-
वन बर वच प्रमाण सुनु इन्द्रिन देहु तेरा ॥ ५ ॥

२१ राग खंमाच ताल झुमरा

श्री रुद्राणी ब्रह्माणी तू भुवनेश्वरी जैजै श्यामा तू मा-
तङ्गी बाराही तू धूमावति गुण धामा १ बगला मुखी
लक्ष्मि छिन्न मस्ता दुर्गा तारा नामा काली कलिक
लमष को नाशनि त्रिपुरसुन्दरी भामा २ दश विद्या
के नाम लेत नर लहत तुरत विश्रामा देव सुवन आ-
नन्द मगन मन गावत गुण अनुपामा ॥ ३ ॥

२२ राग देश ताल रूपक

भनु मन कालिका शुभ दानि कंज लोचन नाश मोच-
न भक्त वत्सल बानि १ जासु गुण कर श्रवण अ-
नुकूल करत अघ को हानि नाम बारेक कहत प्रि
य सो होत मंगल खानि २ भूमि जब जब भार पाये
देव द्विज दुख जानि विविधि तनु धरि मारि दुष्टन रा
खी श्रुति कानि ३ होत सुरपुर योगन र ध्यान

हियमें आनि देवसुत नव धारा आय द्रवहु शिव कीरानि ॥४॥

२३ राग भंभोटी ताल धीमा तेताला

जय जय जगजननि दयानी जब जब गाढ़ पेर भक्ते न पर तब तब धरी तन अमित भवानी १ मत्स रूप धूमावति जानो बगला सुखीकूर्म सुलि जानी शूकर रूप धेरु मातङ्गी छिन्नमस्ता नरसिंह बखानी २ त्रिपुरसुन्दरी परशुराम है सहस्रार्जुन दल भानी भुवनेश्वरी वामन तन कीन्हो लक्ष्मी बौद्ध रूप अनुमानी ३ दुर्गा कल्की राम तन तारा भैरवी हलधर आनी पूरण ब्रह्म कृष्ण काली कहि देवसुवन शुभमंगलदानी ॥५॥

२४ राग ईमन धुपद ताल चौताला

शारद प्रसाद होत बुद्धि विद्या विनय ज्ञान ध्यान अक्षर शुद्ध बानी उक्ति युक्ति मंथन स्वर राग ताल तान श्रुति दर्शे सुनि नाद रस सानी १ शुद्ध शालंक संकीरन शुद्ध विकृत नयन बिरस अस्थाई सचाई हौं कछु न जानी २ होय के सुबुद्धि भेद सबकोल खायमूढ़य दीजे शुभ सुवन याचै तोहि वाक वानी ३

२५ राग लैम भंभोटी ताल एकताला

जगत जलधि तरण तरणि भक्ति जाको वेद बरणि

करुणा धार नाम ज्नु प्रेमनोरनाको १ रहैवनवार ध्यानतोर संमुख वाचु छायाकोर नाल नर्नाने हेसोनजि जाउं पूरण काको २ सप्तदीप नवखं खंड रह्यो फैल यश अखंड प्रांभु प्रेम रटत सदा सुख अपारथाको ३ निद्धि नवसिद्धि अ-ष्ट पाये देवसुवन अति अधार सकललोक पूज्यपद विपायो दिलथाको ॥४॥

२६ रागकाफ़ीतालतेताला

यह पवित्र काली को सेवत पाप पहारनघात भलेहो अगम अपार अमार नगन सुख सगा अंकुर लखिपान पलेहो १ होत भक्तिरश्री का लीके जावत अनिमादिक सुथलेहो शिवब्र-ह्मा सनकादिक नारद शेष मयेसिद्धि रहिकु-थलेहो २ अविगतिकी गति लखिन सकेकोइ तातेनरजड़ नातहुलेहो देवसुवन सतसंग करे जनतब यह महिमा लखि अचलेहो ॥३॥

२७ रागदेषा तालधीमा तेताला

हे काली करुणामय अम्बा जगदम्बा मम अर्ज सुनोजू मति हमार तव गुण अधारकरि रहै सदा दिनरैन तुनोजू १ गुरुकाली विज्ञान कालि अरु ध्यानकालिका हृदय गुणोजू योगकालि अरु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कर्मकालि सुख भोग कालि यश विमल चुनोजू ४
युक्ति कालि अरु मुक्ति कालि कहि नाम कालि
अघ पुंज धनोजू कालि गान काली मान काली
सुखसुवन प्रमा कालीजपिजावो दुख पावो न पुनोजू॥३॥

२८ राग सोहनी ताल धीमा तेताला ॥

देखो हो रे अद्भुत आनन्द छाय रह्यो रे कतहुं नृत्य
कहुं गावत गुनिजन कहुं याचक धन पाइ रह्यो रे १
कहुं द्विज आराधन होम करत हैं महँ महँ महँ महँ
होत महा रे कहुं बलि होत चलत असि छप छप
शोणित बहि सम जात बह्यो रे २ कहुं कहुं फिरत
भक्त मन उमगे जै जै जै धुनि टेरि रह्यो रे देवसुवन या
ओसेहि अवसर भक्ति सकल सुख खानि रह्यो रे ॥३॥

२९ होरी राग बहार ताल जत

काली जू खेलत होरी भुवनेश्वरी बगला धूमावति
मातङ्गी संग जोरी उमा रमा तारा सावित्री सची स
हित सुर गोरि सकल मिलि भई एक ओरी १ एक
बर शंभु सकल सुरसुर पति विष्णु विरंचि लयो री
खेलत रंग बिबिध उपजावत सो छबि कहि न परो रे
भक्त सुख खेलत होरी २ बाजत चंग मृदंग बांसुरी
झाल झांझ डफ कोरी उड़त अबीर लाल बादल
भा कछु नहिं जात लखो रे लाल चहूं ओर भयो री ३

देवसुवन सामा होरी के घोष हुं कहि न सकोरी मैं केहि भांति एक रसना तें ताको बरनि निहोरी भक्ति बर मांगि लयोरी ।। ५ ।।

२० होरी राग सिंदूरा तालजत

कालीजू के दरबार होरी धूम मची उड़त गुलाल अबीर कुंकुमा के घार भरि पिचकार १ बाजनता-ल मृदंग चंग बहु मुरली बीणा सितार धरि धरि देह राग रागिणी युत जुरे तान श्रुति चारि २ रंभा अरु तिलोत्तमा उरबसी जुरे सहित शृंगार ये सब नाके नटी जहं नाचत लावत भाव अपार ३ जो सुख को तरसत ब्रह्मादिक सो सुख के बलिहार देवसुवन तेहि अवसर पावै लहै भक्ति निधि सार ।। ४ ।।

२१ राग बहार ताल जत

नयना लागि रह्यो मा दरशन के नव पाय खोजत खो-जत उमरि बीति गो तीरथ तीरथ जाये १ ब्रत पूजा उपवास विविध विधि करि करि श्रमन अघाय जक ध्यान से डोलत घर घर कबहुं नहीं सचु पाये २ जब सतसंग संग मन लाग्यो नाम नेह बिरमाये देवसुव न सहजहि उर अंतर दरश दियो जगमाये ।। ३ ।।

२२ राग बहार ताल जत

काली मंदिर के द्वार के घार रंग भरे बाजत ताल मृदंग (क्रमशः)

झांझ डफ़ अरु मंजीर सितार होरी अकथ कोर १
उड़त अबीर लाल चहुं दिशि भय सूझत बार न पार
होत कुतूहल भीरी आंगन में कौतुक देखन वार
होरी लखत खरे खरे नाना भांति सुगन्ध चलत है
खान पान बहु वार देव सुवन तहां मांगि लियो अ
कालि भक्ति सुखसार नाहि निति अमरयो ३

३३ रागकाफ़ीतालजंत

काली रचि रूप बनाई मुंड माल गल अवरानि
कुंडल झलकनि केशरसाई मनहु नील गिरि
शिर पर भानु लखि कजावलि छबि छाई ध्य-
टा बरणी नहिं जाई १ भाल अर्ध बर तिलक
निशाकर सुझन शिर पहिराई मनहु राहु भय
भाजि भजत विधु चरण शरण पहं आई तिन्हे
शिर लीन्ह चढ़ाई २ साज सजी सब योगिनि-
गण मिलि भव मंगल गुण गाई केशर अबिर रं-
ग भरि भर करलै पिचुकी छहराई जलद जनु
झूमि झरि लाई ३ बाजत बीन लीन सुर रुद्द धु-
नि सिरदंगनि समताई देव सुवन सुनि दरश हेतु
सब देव देवि नभ छाई सुमन हरषित बरषाई ॥४॥

३४ राग होरे काफ़ी ताल जत ॥

होरी रंग रची जग तारा नुतारनिहारी त्रिपुर आदि

بھجن مالا

छाली सब सखि मिली बन्दनी समर लली नाचैं संग मची १ अरिगमादिक सब सिद्धि सराहत क मला करै सुरमानगावै ताल जची २ अबिरमयी सुरनदी प्रवाह सुनि ललना मनो पुनिकाल मंजे कीचमची देवसुवन जाकी नाम तारिणी रटै रुचिराग्रि सोहै मोक बची ॥४॥

३५ राग बिहाग ताल आंड़ा तेताला

जयजय बचन देवता बानी प्रणत सुमति दा सु खद सिद्धि दा नारायणी कीवानी १ तुम्हरे चरण कमलरज सेवत नारदादि मुनिज्ञानी सनकादिक ब्रह्मादिक ध्यावत व्यास देव बिज्ञानी २ मूक होत बाचाल मानु नवलांहि प्रद जब प्रानी सुरनं दनशारद करुणा मयो प्रकृति दूसरि जानी ॥३॥

३६ रागविहागताल आड़ा तेताला

जय जय सावित्री श्रुतिमाला छन्दो मई सर्बदुख हरणी यंत्र सुमंत्र तंत्र को दाला १ महिदेवन्हि के जाति रूपजो जप रूपा जप चाता तपसिन्हि ब्रम्ह नेमको दायिनि विद्याजलधि वृद्धि को धाता २ विधि के पिया शीलगुण पूरण ध्यानहरत अघ ब्राता देवसुवन को देहु अभय बर होइ सुयश जग ख्याता ॥३॥

२७ राग मालकौस ताल एकताला

तन मन धन वारों चरण कमल पद्मतो जेहि ध्याव‍त ब्रह्मा शिवशारद शेष सकल सुरवेरो १ हे काली कमलापति माया अष्ट सिद्धि तवचेरो नवनिधि लहत बिनहि श्रम जग में जो जन तव पद हेरो २ हे जननी जन के दुखहरनी सुनिय विनय यक मेरो देवसुवन के हरहु सकल दुख बारि के हिय में डेरो॥३॥

२८ राग विहागड़ा ताल झपताला

जय जय जग जननि देवि राधा सुर चरण सेवि सुद्धि बुद्धि वृद्धिदा त्रिलोक स्वामिनी १ सर्व शक्ति में प्रधान निगम करत विभव गान पावत जन ज्ञान ध्यान अमित नामिनी २ वृंदावन वास करनि संतन रिपु त्रास हरनि सकल भुवन चरित भरनि कृष्ण कामिनी ३ कृष्ण मन मानसमराल कृष्ण हृत विमल ताल कृष्ण प्रीति पाल मालि सुभग भामिनी ४ कृष्ण महित सदा नाम देवसुवन अष्ट याम पावत मन काम लेत दिवस यामिनी ॥५॥

२९ राग विहागड़ा ताल जल्द तेताला

भजु मन राधा राधा राधा राधा नाम सकल जग साधक

काटत यम के बाधा १ आदि शक्ति दुखिनाशक भक्तपरशूल कृष्णतन आधा २ लक्ष्मी हे वृष भानुलाड़िली सबगोपियन में साधा ३ वृंदावन के रास थली में पूज्यो नव पद कांधा सुरनन्द को भक्ति देहु निजअखिल अमर पददाधा ॥ ५ ॥

४० रागविहाग ताल झपताला

जयति जयति जनक नंदिनि रामरंजनी शारदचं द मुख अमन्द ध्यान करतहरत द्वंद मेटत यम फंद भानुनेत्रखंजनी १ कुण्डल शोभित क- पोल चूड़ामणि अति अमोल कोकिलरव मधु- र बोल सरयु मंजनी २ निरखत छबि भानुतेरि हरषत हिय चितमेरि बरसात गुण रूपहेरि कुंद वर्जनी ३ देहु भानु भक्तिदान दानी नहिं तुम समान याचौं नहिं देव आन भक्तिरंजनी ४ देव सुवन हर्ष सहित गावत नित तवचरित्र पावन महि धन पवित्र पापगंजनी ॥ ५ ॥

४१ रागईमन ताल तेताला

हे सीते मिथिलेश लाड़िली त्रिभुवन पति रघुवर की प्यारी वेद पुराण संत गुणगावत महिमा अग- म अपार तिहारी १ सनकादिक ब्रह्मादिक ध्यावत सहित शिवा नित जपत पुरारी गणपति जन पति

धनपति दिनपति सकल पूज्य पद सदा तुम्हारी २
मति न मोहिं तव अस्तुति बनावों गावों सुनावों
विनय अघहारी देवसुवन को हरहु सकल दुख
देहु भक्ति निज सब सुख कारी ॥३॥

५२ राग श्याम कल्याण ताल धीमा तेताला ॥

जपो सदा काली को नाम मन को होवै काम दर
स किये ते होत मन आनन्द सुख पावत गुण गाव
त शुभ धाम १ परसत पग अघ भाजि जात लह
त मन काम आठो याम २ यह जिय जान माने शि-
व गुरु को याते सुरसुवन मन होत है विश्राम ॥३॥

५३ राग ध्रुपद श्याम कल्याण ताल चौताला ॥

दुर्गा को पद सेवो जाते मिले अर्थ धर्म काम जा-
को प्रबल प्रताप तेज धर्म को पताको फहरात मो-
क्ष पद पावत लेत नाम १ कनक दण्ड चमर छत्र
वैकुण्ठ ते सरस सुन्दर सुख धाम २ रतन सिंहास-
न पै बिराजित बोलत हैं बंब्रूहि देव सुवन मंगल
स्वरूपिणी शिव बाम ॥३॥

५४ राग खंभाच ताल चौताला

करौं कौन अस्तुति मातु तेरो अल्प बुद्धि मेरो तव
गुण अपार सहस बदन रटत रहत निशि दिन
नाहिं लहत अन्त गावत नहिं मिलत पार अति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बिस्तार १ जेते जगजीव तेरो मंत्र जपत सिद्धि करत जाको जस प्रेम ताहि देति फल बहु प्रकार २ सब को प्रति पाल करति देवसुवन दास जानि अभय करत पूरा श्व भनत त्रिपुरार ॥ ३ ॥

४५ राग सोहनी ताल तेताला

क्लेश हरण जो काली ध्यावै ताको अनन्त दुख दूरि जात तत क्षण १ मन वच क्रम चरणाधार दृढ़ सोई होत धनधन २ ज्ञान ध्यान चौसठ विद्या कला लहत बढ़त सुयश चारु होत सुभग तन ३ देवसुवन को यह शिक्षा मानि लेहु भोलिंग होकरि अतिशय मगमन ॥ ४ ॥

४६ राग काफ़ी ताल तेताला

काम क्रोध तजि पद काली को भजो जाहि ते जग निस्तार कत समुझायो समुझत नाहीं ऐसो मन अविचार १ एस एस जगदम्ब अम्ब दूजो अवलम्ब नाहिं वैतो अधम अघी अपार २ कहत देवसुवन तव किंकर याके तारे नाम तिहार ॥ ३ ॥

४७ राग बिहाग ताल आड़ा तेताला

मन मेरो कालिहि न बिसारो सब दिन काली कल्प कल्पान्तर करति सदा जन के प्रतिपारो १ सत युग में नरहरि शरीर धरि जन प्रहलाद उबारो

(हिलना)

हिरणा कशिपु हति जगत बिमल यश श्री काली
बिस्तारो २ बलि छलि राज दियो सुरपति को क-
रि वामन अवतारो त्रेता परशुराम वपु धरिके
सहस्रार्जुन संहारो ३ तैसेहु रामचंद्र वपु धरिके
हति दश मुख कुल सारो द्वापर में बलदेव रूप
ह्वै द्विबिद नाम कपि मारो ४ काली कृष्ण रूप
धरि जग में अति लीला बिस्तारो देव सुवन सब
दिन करुणामयि सज्जन कर रखवारो ॥ ५॥

४८ राग गौरी छन्द लावनी ताल रेखता

हे काली कश्मीर बासिनी तू कामाख्या रानी ज्वा-
ला मुखी जगत की जननी अघ हननी भवबानी १
ब्रह्म मई तू वागवादिनी वाराही ब्रह्मानी तू वा-
नी बिमला कमला सनि महिमा वेद न जानी २
तेरोइ सुमिरन तेरोइ धारन तेरोइ ध्यान भवानी
देव सुवन मन रहै दिवस निशि देहु इहै बरदानी॥ ३॥

४९ राग भैरव ताल जल्द तेताला

जै काली कल्याणि दायिनी श्री कमला पति माया
लिंग धारिणि कार्मुकी कुमुदा विशाला हि सुर
जाया १ विश्व कामना पूरणि ललिता गोमति
गौरि जयंती रंभा कीर्ति मती विश्वे श्वरि रुद्राणी
खलहंत्री २ काम चारिणी भद्र कर्णी का मंद नथा

भवानी मदोत्कटा पुरुकुलाकुमारी कपिलाबि-
मलाबानी ३ अम्बुप्रिया सन्मार्गदायिनी मुकु
टेशुवरि महामाया देवसुवन के हरहु सकल दुख
हतिके शत्रु निकाया ॥४॥

५० राग शंकरा ताल झपताला

जयजय जग प्रगट करणि सज्जनजन त्रासहारिणि
भक्तिजननान्दि अदारदारिणि बिंध्यवासिनी १ हे ब्र-
जेशनन्दिनी समस्त लोक बन्दिनी त्रिलोक
शोकहारिणी तु शत्रुनाशिनी २ सेवत तव पद
सुरेश ब्रह्मा मुनिगण दिनेश पावे सबसिद्धि
हृदय यश प्रकाशिनी ३ देवसुवन बिभव पा-
य रहे तव पद अघाय दीजे बरदान मातु रव-
ङ्ग पाणिनी। ४

५१ राग देश ताल जल्द तेताला

गिरितनया पद भजन करो मन तजि के छल च-
तुराई रे जाकी कृपा पाय जल जासन शुभ बिधि ज-
गउपजाई रे १ जाके शक्ति करत हरि रक्षा अंत
रुद्र बिनसाई रे जिन्ह के शक्ति पाइ नर बर पति
पावत बिपुल बड़ाई रे २ जिन की कृपा पंगु गिरि
लांघत अंध हि जग दरशाई रे देवसुवन जाके पसा
दते सकल काम सिधि पाई रे ॥३॥

५२ राग खंभाच ताल धीमा तेताला

बरणौं तीर्थ रूपिणी देवी नाम लेत अघ ओघ
नशानी सह्याद्री पर महालक्ष्मी माता पुराणु-
का बखानी १ तुलजा पुर प्रात पतंग तीर्थ वर ज्वा
लामुखी विराज भवानी चीन देश में नील सरस्व-
ती शाकंभरि थल सब सुखदानी २ नील शैल
पर नीलाम्बा थल वैद्यनाथ में बगला जानी कां
ची पुर में भीमा देवी मणि द्वीप भुवनेश्वरि रानी ३
मंत्री पुर कामख्या कामरू योगेश्वरि एकां बरा
मानी ये सब श्रेष्ठ तीर्थ सुरनन्दन दरसन मात्र
करत अघ हानी ॥ ५ ॥

५३ राग बिहाग ताल आड़ा तेताला

काली मुख निरखत लज्जित चन्द जाके पद ब्रह्मा-
दिक ध्यावत नारद सनक सनन्द १ शारद महेश
गणेश आदि कवि पूजत तुमहि अखंड पावन
यश नित वेद बखानत व्यापि रह्यो ब्रह्मंड २ देहु १
मात निज दास जानि के याचत भक्ति अभंग देव
सुवन के हरहु सकल दुख भरहु सुभद सुख अंग ३

५४ राग झंझोटी ताल जल्द तेताला

रक्तबीज सों कहत भवानी सुनहु मंद मति प्रथम
मोहि पै पठयो दूत अधम अघखानी १ ताहि कहो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मैं जाहु शुंभ ढिग कहहुं मोर परतिज्ञा बानी तीनि
लोक पर रूप जाहि के कबहुं न ग्रहण करौं अभिमा-
नी २ जो रण जीति विवाहै विधिवत होइ रहों ताकी
पटरानी देवसुवन सम अस प्रमाण सुनु तासु दूत
तुम हूं अज्ञानी ॥ ३॥

५५ राग झंझोटी ताल जल्द तेताला

रक्तबीज सुनि कर्कस बानी ईर्षा क्रोध भयो
उर अंतर छाड़न लागु बाण अभिमानी १ छण
महं तासु बाण खंडन करि जगदंबिका भक्त सुख
दानी मारयो बाण असुर उर तीक्षण रथ पर मूर्छि
परा अज्ञानी २ लखि धाये सब असुर सेन प्रार
बर्षन लाग मेघ जिमि पानी पुनि प्रार छाड़ि काटि
अरि बाणहि निज प्रार मारि असुर दल भानी ३ रक्त-
बीज बध करि रण भीतर सुखी कियो सुर संत भवा-
नी देवसुवन को करहु सुखी अब हरि के सकल
शत्रु कल्यानी ॥ ४॥

५६ राग मलार ताल तेताला

श्री काली छबि निरखि हरष युत निशि दिन तरसत
नयन हमारे योगी ब्रह्म सबै जेहि ध्यावैं सनकादिक
शिव रूपहिं गावै नारद शारद शेष आदि सब कह
नारद सनुगुण कोहीं ब्रह्मा रूप सकल जग जाये पालन

बिष्णुस्वरूप कहाये रुद्ररूप पुनि नाश करततुम
तव गुण अगम पार नहिं पावे २ जिमि बरषा सब
घास उपजावत चंद्रप्रीति निजताहि बढ़ावत सूर्य
जोति ते नाश करत तेहि निगुण रूप तुम सब से न्यो
रे ३ चारो वेद सदा गुण गावत गणपति आदि
सकलसुर ध्यावत करहु कृपा निज दास जानिके
देवसुवन मन तव पगु धारे ॥ ४ ॥

५७ राग मलार ताल तेताला

श्री काली कवि श्याम घटा लखि हरष प्रफुल्लि
त जन मन मोरवा गदामिनि दमक ध्यान दरशा
ये बरषा अमिय बचन सुख छाये योगी जन मन
मुदित जाहि में मगन रहत निशि दिन तजि शो
रवा १ वह बरषा ऋतु जब उर आये कलि ग्रीषम
के ताप नशाये नाना गुण घास प्रगट होत हैं मि
टत अविद्या निशा जिमि भोरवा २ क्रोध लो
भ अरु मोह जवासा गलित भये सब रहि घन
आशा देवसुवन के हिय नभ रहु है बसकु सदा
काली घन जोरवा ॥ ३ ॥

५८ राग मलार ताल तेताला

श्यामा सखिन हिंडोल झुलावत सची शारदा
आदि शक्ति सब देवन को मिलि गावत १ सुहो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मलार गुंड अरु सोरठ राग रंग उपजावत सघन कुंज घन घोर मोर पिक दादुर शब्द सुनावत २ अति विचित्र हिंडोल शाल लखि बल्लभ सुखहि बिस्-रावत देवसुवन शोभा समूह लखि जय जगदंब मनावत ३

५९ राग मलार ताल तेताला

श्यामा झूलत सरस हिंडोले शावन सघन कुं-ज की शोभा त्रिबिधि पवन जहां डोले १ घन ग-रजत रव करत पपीहा मोर शोर धुनि बोले दादुर कीर कपोत कोकिला सारस हंस अमोले २ कुसु-म अनेक भांति बहु फूले अलि गरा करत क-लोले देवसुवन श्यामा हिंडोल लखि रवि रथ होत अलोल ३

६० राग ईमन ताल चौताला

ओंकार प्रथम मान शक्ति में काली प्रधान रुद्र मान महादेव वेद मान ब्रह्मा सिद्धि में गरोश मा-न तेजन मह सूर्य्य मान निशा माहि इन्दु मान नृ-त्य मान रंभा १ तीरथ प्रयाग मान ऋषिन में नारद सुजान गान में मगीन मान नदी मान गंगा नर मेंन-रेश मान असुरन में बलि प्रधान साज मान बीरा कहत संत सज्जन संगा २ पुष्प मान पारिजात तरु में सुरद्रुम कहत दान मधि अन्न मान धर्म मान स-या कहै सुरसुवन मान जिनके सब कला जान काली

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कल्याणी मात जगत जननि माया ॥ ३ ॥

६१ राग भैरवी ताल तेताला

कमला बंदत हौं पद द्वंद शुद्ध स्वरूप त्रिभुवके मोहि· नी बिस्नु प्रिया सुख कन्द १ क्षमा शील युत मति गंभीर ध्वनि चलि गति सुगति अमन्द भक्त भवन में बिभव दायिनी गावत यश श्रुति छन्द २ लोभ मो ह मद क्रोध वर्जिता हरनि भ्रमन को फन्द काटु कु· धा भव हरहु सकल दुख याचत बर सुखनन्द ॥ ३ ॥

६२ राग काफी ताल तेताला

कमलपद सुमिरौं कल्याणी कमलासन को कृष्ण प्रिया नारायिनि लक्ष्मी कमलपत्र तन भासनि· को १ कमल मुखी कर कमल बिराजत कमल कोश महं बासनि को २ कमल नेत्र पद बिमल कमल से ध्यान करत अघ नाशनि को ३ कृष्णचं· द्र के हृदय चंद्र दुति देनवारे सुख राशनि को देव सु· वन भजु सदा रैनदिन श्री वैकुण्ठ निवासनि को ॥ ३ ॥

६३ राग पूरवी ताल जल्द तेताला

भजु मन चरण कमल कमला के विष्णु लोक में म· हा लक्ष्मी कहत नाम श्रुति जाको १ इन्द्र लोक में स्वर्ग लक्ष्मी स्वाहा होम थल माहीं गृह लक्ष्मी गृह स्थ के घर में नाम जासु सुखदा वसुधा के २ जिन्ह

۸س۳.معجن ۱۱/ب

बिनु नर आदर नहिं पावत छिन कुटुम्ब के माहीं देव
सुवन चितवत नाही पर पूजन करत सकल जगनाकोय

६४ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

श्री देवी चरणारविन्द में मन मेरो अलि लागि रह्यो
जो देवेषि जगत के कारण हिरणगर्भ के कारण
धारण गदा चक्र अरु पुंख कंज कर सदा हृदय हु
रि जागि रह्यो १ ब्रह्म रूप जो सब जग जाया अंड
कटाह अनेक उपाया नाहि ब्रह्म के पर स्वरूपेशी
जासु भक्ति सुभागि रह्यो २ माहेश्वरी सुमहा भा
गवति महाउदय माहामाया मति देव सुवन को वही
महा शक्ति शरण भक्ति गुण पागि रह्यो ॥३॥

६५ राग झंझोटी ताल आड़ा तेताला

जगत जननि रानी हरि माया ब्रह्मा विष्णु महेश
सकल सुर सेवत तोहि अमित बल पाया १ करत
विधाता सृष्टि विविधि विधि पालत विष्णु सबहिं
करि दाया पुनि कल्पान्त माहिं शिव सहजहि कर
त नाश लहि शक्ति सहाया २ हे जननी जगदम्ब
अम्बिके देवसुवन तुव शरनहि आया करहु कृपा
मम हरहु सकल दुख करहु दया निधि भक्ति सहाया ३

६६ राग काफ़ी ताल तेताला

काम क्रोध मद लोभ छाड़ि के क्यों काली पद भजत

नहीं रे जात समुझाइतु समुझत नाही ऐसो जड़ अविचारगहीरे १ ज्यों माता अपने शिशुसुत को नहिं अपराध गनत मनहीरे त्यों तेरे अघ क्षमा करहिं गो कल्याणी करि कृपा सहीरे २ सेवत चरण कमल सनकादिक ब्रह्मादिक सुरगण सबहीरे देवसुवन अम्बा करुणामयि तुमहिं देव नवनिधि घरहीरे।३।

६७ राग काफी ताल तेताला

योगी जन जाको ब्रह्म रूप करि लखत सदा वैस्नव विष्णु रूप करि ध्यावत कर लीन्हे गलजादि गदा १ शैव सदा शंकर करि ध्यावत कर त्रिशूल वाहन बलदा शाक्त शक्ति कहि ध्यावत जाको सिंह च- ढे नाशनि विपदा २ सौर सूर्य कर ध्यान करत मे- हि तन प्रकाश मय अलख सदा देवसुवन काली पांचो वपु ध्यान हरन यमराज फंदा ॥३॥

६८ राग काफी ताल मध्द तेताला

कालीनाम सदा नर मूरख रहत न क्यों रसना पर धारे कनक वरण मणि जटित आभूषण वसन छ- टादामिनि दुति वारे १ नील जलद सम तन दुति कारी हृदय बिमल किन करत सदारे दुख दारिद्र सब भागि जाहिंगे नवनिधि सिधि वस होत तुम्हा रे २ आगनित जन्म के पाप नशै हैं लैहै आनन्द

सबतबद्दारे देवमुवनमुत संपति बहुविधि पा-
यो काली कृपा निहारे ॥ ३ ॥

६९ राग झझोटी ताल तेताला

देवी द्वारे बाजत यंत्र पंच मन भायो पखाव नि-
शान भेरि सहनाई बीणारबाब मृदंग सुहायो १
चंग उपंग ढंग बहु बाजत नर अरु नारि जुड़ायो
जगमग होत ज्योति मन्दिर में देवमुवन लखि होत
अघायो ॥ २ ॥

७० राग भैरवी ताल मल्द तेताला

तव चरण कमल पर मन है भ्रमर लोभानो जै
से चंद्र चकोर १ जिमि चातक स्वाती के बुन्द
से कमल भानु घन मोर २ अरु जिमि कुमुदि-
नि चाहति चंदहि चाहत चकई भोर ३ देवमुव-
न तव भक्ति चाहत हृद देहु दया नहिं हि हग कोर ४

७१ राग काफी ताल तेताला

श्री गंगा पद ध्यान करो मन तन के दुरित नशाई
विष्णु लोक से चली दयानी शंकर जटा समाई १
तहाँ ते चारि धार है निसरीं चारो नाम सुहाई सी
ता चक्षु अलकनन्दा पुनि भद्रा सब सुख दा
ई २ सीता केसर गिरि वर होकर गंध मादनहि (समाई)
जाई पुनि भद्राश्व खंड पूरब है क्षीर सिंधु हि

समाई ३ माल्यवान्त गिरि हो अलि वेगहि केतुमा लमहि छाई जो पश्चिम के जलधि माहिं मिलि चछु नाम श्रुति गाई ४ तिजो अलकनन्दा जैहि का ल्यित गिरि सुमेरु है धाई त्रिशिखा शिखि हो नाघ न नज गिरि हेमकूट मन लाई ५ तहांते भरत खंड पा वन करि सारसिंधु ठहराई जासु स्नान चलत पग प्र तिनर अश्वमेध फल पाई ६ भद्रा शृंगवान गिरि वहै भद्रास्वर्व महं आई देवसुवन त्रैलोक पावनि उत्तर जलधि समाई ॥७॥

७२ राग काफ़ी ताल तेताला

श्री राधा पद पद्म ध्यान करु साम वेद जो लखायो है चम्पक स्वच्छ समान देह द्युति शरद चंद मुख भा यो है १ शरद कमल लोचन बिंबाधर अरु श्रो नासा सु रव छायो है नासिक कुंद घटिका राजेति दन्त पंक्ति द्युति पायो है २ गुहि अग्नि भ्रमर श्यामी तन प्रहसि त वदन सुहायो है देवसुवन त्रैलोक स्वामिनी कृ ष्ण प्रिया यश गायो है ॥३॥

७३ राग भैरवी ताल तेताला

हे राधे वृष भानु नन्दनी कृष्ण प्रिया गुण खानि सु नो जू १ तुम्हहिं छाड़ि गति और न मोको राधे पूरि मन कामन गुनो जू २ कबहुं न दान धर्म कछु कीन्हे

नहिं जप योग न ज्ञान सुनो जू ३ देवसुवन को य-
ही भरोसा जास गाइ तव अघहि भुनो जू ॥४॥

७४ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

श्री राधा की श्रेष्ठ सहचरी सुरभी चरण मनावो रे प-
रमेष्ठी लक्ष्मी स्वरूपिणी गोमाता गुन भायो रे १
अधिष्ठात्रि देवी गायों की गो गोत्रा गुन गायो रे अ-
ति पवित्रदा सब सुख देनी वेद टेरि के सुनायो रे २
घट अरु गाय भैंस के माहीं अग्नि अंबुहि सु
हायो रे गो वत्सन थल ग्रालि ग्राम में सुरनन्दन
जो मुनायो रे ॥३॥

७५ राग विहाग ताल तेताली

सुरभी नाम सकल गो माता मोपर होहु प्रसन्न भ-
वानी १ एक समय सब जगत माहिं जन गाय रही
न वयानी सब के छीर लीन्ह सुरभी हरि तब इन्द्रा-
दिक पूजा ठानी २ षोडश भांति पूजि उरगारा मि-
लि अरु अनेक अस्तुती बखानी देवसुवन तब सक-
ल गाय थन सन माहिं आई छीर प्रगटानी ॥३॥

७६ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

जैसे श्री मनसा देवी को जो कश्यप मानस से प्रग-
टी सकल सुरासुर सेवी को १ जो भगवती सदा निज
मन में परब्रह्म ध्यावत सदा सभा में ताते नाम कहत

(मनसा)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मनसा करि ब्रह्म वेद अभि देवी को २ जो नर मनसा-
पद मन धारे छूटि जात दुख होत सुखारे देवसुवन ला-
ग्यो मन न बिसारे चरण कमल हरि सेवी को ॥ ३ ॥

७७ राग नट

भजु मन कालिका शुभ नाम रटत मोहि सनका-
दि हरि अज भये मंगल धाम २ सुरथ नृपति स-
मारि सुडर गयो बन तजि ग्राम सुमिरि जाको नाम
पावन लहे सब मन काम २ अखिल भंड कटाह स-
बजग जननि चरन प्रनाम अमित महिमा कहि
न सक श्रुति आदि सिधि परिणाम ३ रटत रसना
नाम काली लहत नर विश्राम देवनंदन शरण आ-
ये हरहु शंकर बाम ॥ ४ ॥

७८ राग काफी ताल तेताला

मनसा होत प्रसन्न जाहि पर तासु सकल दुख छूटे १
होत यथा चमक द्युति दामिनि तनकी कांति लोभि
छबि लूटे २ देवसुवन मनसा प्रसाद तें टूटे नेह जा-
न पुनि जूटे ॥ ३ ॥

७९ राग काफी ताल तेताला

जो मंगल चंडी पद सेवत मंगल भवन होत नर सोई
सकल अमंगल मूल नसावत पावत सब सुख दुर्लभ
जोई १ जगत जननि जग मंगल करनी जिन्ह सरी अ-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अवरन कोई ताके सर्व कामना पूरा देवसुवन सु-
मिरन सदा होई ॥ ४॥

८० राग खंभाच ताल तेताला

सदा मनावो षष्ठी कों जिहि सेवत सुख पावत नी-
के १ पुत्र पौत्र धन विविधि लहत नर पूरन सकल
कामना जीके २ देवसुवन षष्ठी प्रसन्न ते करत
हलाहल काम अमीके ॥ ३॥

८१ राग खंभाच ताल तेताला

स्वधा नाम उच्चारत तें नर होत पवित्र पुराय के खानी
स्वधा नाम जगदम्ब अम्ब के भक्ति करत है जो प्रानी १
सकल तीर्थ अस्नान लहत फल अश्वमेध फल
पावत जानी २ स्वधा स्वधा पुनि स्वधा बार त्रय जो
नित रसना आनी तर्पण आद बहुरि बलि के फल
देवसुवन पावत नर मानी ॥ ३॥

८२ राग ईमन ताल झपताला

जैजै आद्या भवानि जगत जननि विदित बानि भक्त
जनन्ह अभय दानि तू गुनेश्वरी १ जैजै नेन्द्र नन्दि-
नी अनन्त देव वन्दिनी प्रनात जनन्ह प्रारा दानि
जै महेश्वरी २ तेरोइ पद ध्यान धरत तेरोइ गुनगान
करत हरत अघ समूह मात जै विधेश्वरी ३ तेरो पद ह-
द हरा देवसुवन आये शरणा दीजे निज भक्ति मातु जैजै नेश्वरी

९३ राग काफ़ी ताल तेताला जल्द क़व्वाली

बिनु काली पद भजन किये नर तन की नर निस जात धीरे जा पद को सेवत ब्रह्मादिक सनकादिक मुनि निकर सभीरे १ जासु प्रसाद अखिल अघ तनते कात नताप जात नहि धीरे नाना बिधि सुख सम्पति छावन देखु बिचारि जग विदित अभीरे २ काली कल्मष नाशनि कलिमें वेद पुराण कहत सबहीरे देवभुवन जोजपतैनेदिन तासु निकट दुख जात नहीरे ॥३॥

९४ राग काफ़ी ताल तेताला जल्द

जो मन दसै कालिका के पद सो बांछित फल तत्क्षण पावै अधम उधारनि नाम जपत सब जा सुमिरे अघ राशि नशावै १ तुम उदार दानी सबही बिधि वेद पुराण संत सुर गावै देवभुवन को यह वर दीजे अचल भक्ति तुव चरणन पावै ॥२॥

९५ राग काफ़ी ताल तेताला जल्द

श्री काली को नाम लिये नर छूटि जात भव बाधन से मंगल मूल अमंगल हरनी त्राण करनि यम शासन से १ अमित अपार नाम की महिमा वेद कहत नहि द्वासन से ताको नहिं त्यागी निज उरसे डरी नहीं जग पापन से २ जो कछु मिले अन्नजल लैके खाय ही नव सुधासन से देवभुवन कालिहि समर्पि के

करो भोग निज यासन से ॥३॥

८६ राग ईमन ताल जल्द तेताला

जगदंबा जग जननि भवानी कल्याणी पद कमल भजो रे मधुकैटभ बधि करि दुख जग के नाना भांति हि बिभव सजोरे १ देवेशी विश्वेश्वरि बिमला अमलचरण लखि कमल लजोरे वाके ध्यान करो मन मूरख अपर सकल सुर आशु तजोरे २ जो निज कर्म अकर्म पाछिलो करि विचारि मन माहिं लजोरे सुरनन्दन काली करुणामयि निशवासर करि ध्यान गजोरे ३

८७ राग झंझोटी ताल तेताला जल्द

मन भेरो काली पद जकरी आनन्दिन आनन्द दायिनी क्षण तनजो हारिल निमि लकरी १ कबहिं कुकाल दुकाल न व्यापैहि नहि यम गण पकरी कबहुं न दुख दारिद जगदंतर पीसहि नाहि नाहिं जाय करी २ रहत सदा आनन्द मगन मन धरत न कबहुं मोह मय मकरी देवसुवन निशि बासर क्षण क्षण रहो सदा काली पद पकरी ॥३॥

८८ राग बंग्वीक ताल झपताला

जय जय जगदंब अम्ब हननि मनु दलकदंब दलनि असुरकुल सकल शंभु भामिनी १ आदि पुलिनू भवानि आदि प्रकृति श्रुति बखानि भक्ति मुक्ति

दायिनी त्रिलोक स्वामिनी २ करुणा मयी तू बिधात्रि सकल भुवन बिभव दात्रि नपत नाम सदा देव दिवस यामिनी ३ तेरो पद ध्यान करत बिबिधि भांति पाप हरत टरत त्रिबिधि ताप सुमिरि अमित नामिनी ४ देवसुवन दास तोर चितवो निज कृपा कोर मेटहु दुख द्वंद्व मोर ब्रह्म धामिनी ॥ ५॥

८९ राग काफ़ी ताल सेताला

हे दुर्गे जगदम्ब अम्बिके कल्याणी मम अर्ज सु-नोजू तू गायत्री वेद तत्व तू सतचित मयि मन अ-मल तुनोजू १ नहिं तप जप नहिं ज्ञान ध्यान रत न-हिं कछु नाग न अनल कुनोजू नहिं तीरथ ब्रत नि-यम बिबिधि बिधि नहिं उपवास न तत्व लुनोजू २ केवल एक नाम कालीअस राखि हृदय मन म-गन गुनोजू देवसुवन याचत दिन प्रति तव चरण कमलरज प्रीति चुनोजू ॥ ३॥

९० राग दरबारी कान्हड़ा ताल चौताला

दुर्गेदेवि दुर्गति हरणि अमित सुखको दानि तुम संसार सागर तरणि १ अखिल जगको सृजति पाल ति प्रलय अद्भुत करणि अति अपार विचित्र तुव गु-ण जानत नहिं कछु बरनि २ बिबुध गणके हृदय अंतर बुद्धि होतू रमणि मातु तव पद सेवि जन को

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सकलदारिद्र हरनि ३ राम काम सुधारि पूरिगा र
ज्यरावगा हरिगा नारदादि अनन्त तव गुगा कहि सक
हिं नहिं बरगिग ४ जगत जननी बिपति हननी सदा
अघरन घारनि देवसुतको काम पूरगा शीघ्र कुरु
वर बरगिा ॥ ५॥

६१ रागकाफ़ी तालजल्दतेतालाके वाली

दुर्गा देवी को आसा गहो न बौरे क्या जग झूठ स्व
प्न के माहीं सदा असार सार जेहि नाहीं मोह पास १
निज कराह लगाये माया जाल माहिं लपटाये निघृ
बासबिन घीर न पावत फिरत पुवान से दौरे १ जा
देवी पद देव समेता देवराज सेवत चितचेता अलख
अनीह रूप बिधि ध्याये सकल सिद्धि पदवी को पाये
ऐसो चरगा कामतरु तजि के क्या धावत पर पौरे २
मन दृढ़ करि हिय ध्यान लगावो छल परपंच सकल
बिसरावो रसना रहो नाम को धारे कहो पाहि मैं आस
तिहारे तुम तजि अपर देव नहिं ध्यावों फिरौं नहीं खल
जौरे ३ जगजननी सुनि ऐसी बानी द्रवहि बेगि क
करुगा गांवदानी जनके सर्व दोष बिसराये भगति
सुगृह नवनिधि लाये देवसुवन सुरदुर्लभ जो पद लहत भ
क्त भलि तौरे ॥ ४॥

६२ राग काफी ताल जल्द तेताला

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री काली पद कमल अमल में बसहु भ्रमर मन मेरारे १ जाके पद रज सेवि जनन को छूटत शमन दरेरारे २ जग के सुख तम निशि सपना में सोवत जागु सबेरारे ३ काहे को तुम दुख पावोगे नाहक दुष्ट तरेरारे ४ देव-सुवन काली मन रे भजु पैहसि बिभव घनेरारे ॥५॥

६३ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

श्री दुर्गा दुर्गा भज मूरख क्या जग जन्म गवांवसिरे दुर्गा नाम हरत दुर्गति को कबहुं न ख्याल बिसरावसिरे १ बालापन किशोर तरुणाई बीते का पछितावसिरे अबहूं पन चौथे महं चेतो अमित भांति सुख पावसिरे २ नहिं जप तप ब्रत नियम होम मख नहिं बिराग उपजावसिरे देवसुवन दुर्गा दुर्गा रटि सुमें श्रेष्ठ कहावसिरे ॥३॥

६४ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

जगजननी पद कमल मनाये पाइ कृपा उर अंतर तुरतही सर्व शास्त्र विद नाम कहाये १ जासु नाम महिमा अपार श्रुति परत कलेश न पाये ऐसो नाम धारि रसना पै बिनु श्रम सकल विभौ गृह पाये २ काहे को नर पीर उठावत शिर भ्रम भार चढ़ाये क्यों न लेत धन मांगि माय से सकल सिद्धि जसु दास सदा ये ३ शिव सनकादि आदि सुर सुरपति कालिहि सेइ अघाये देवसुवन कलिनाम काम तरु जपत मात्र सुख छाये ॥४॥

९५ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

मोको आस तुम्हारि दयानी नहिं जप तप नहिं दान
तीर्थ ब्रत ज्ञान ध्यान नहिं जानी १ नहिं विराग नहिं
योग युक्ति कछु नहिं बिनीत स्तुद बानी नहिं मन मग
न धर्म कर्म रत नहिं पोषण परप्रानी २ शुद्धि अशुद्धि
बिवेक नजानो नहिं मज्जन नहिं स्नानी केवल नाम का-
लिका जपिके सकल सिद्धि लहि भे सुख खानी ३
सब शुभ भोग लोग सुत सम्पति बिबिधि बिभव र-
जधानी देवसुवन बिन साधन सब सुख पायो कृपा भवानी

९६ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

सकल देव सेवन काली पद होत सुख दुख पुंज नशाई
शुभ निशुंभ आदि खल गन जत देवन हेतु हतो र-
णजाई १ रामचंद्र के काज संवारेव बिजय लंक
पुर पाई कमल योनि को हरयो प्रथम दुख मधुकैट-
भहि बधाई २ देवराज जब अहै प्राण लहि शरण
देवि गुहराई सकल छिद्र तन भयो नेत्र शुभ पाप
शाप बिनशाई ३ वेद पुराण बखानत गुण को पार-
दरसत सदाई मोपर होहु प्रसन्न भवानी देवसुव-
न बलिजाई ॥४॥

९७ राग ईमन ताल जल्द तेताला

मन मेरो काली अनुरागो लोभ मोह निशि अति अपार

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नम कहा सोवत किन जागो १ काम क्रोध मद आदि
बासना बिबिध भांति के त्यागो नाम अधार राखि
उर अंतर सत संगति महं लागो २ नहिं धन धाम धाम
सुत सम्पति कल्याणी प्रति मागो रहो मगन निशि
बासर मन में खाद अन्न वरु पागो ३ अष्ट सिद्धि
नवनिधि सकल सुख खान पान वरु पागो देव-
भुवन सब भवन भरहिंगे कृपा कालिका पागो ॥४॥

९८ राग ईमन ताल जलद तेताला

जग तारनि तारा पद ध्यायो तारा नाम जपत सनका-
दिक अजर अमर पद अनुपम पायो १ नारद शि-
व चतुरानन सेवत सकल सिद्धि मुनि ध्यान लगा-
यो २ नाम प्रसाद पाय अभि बांसिन वेद पुराणन्ह
प्रगट लखायो ३ बिप्र धेनु सुर भूमि पार दुख जब
दशकंधर आदि सतायो ४ तारा राम रूप कोशल
पुर दशरथ राज किशोर कहायो ५ प्रथम ताड़का
हति सुबाहु सह अरु मारीच भगायो ६ गाधि सुवन
करि संकट काट्यो ऋषि तिय स्वर्गहिं धाम पठायो ७
भंजि धनुष मानिन्ह मद खंड्यो कीरति बिमल लोक
तिहुं छायो ८ देवभुवन जाके गुण गावत कलिक-
लमष तन रहन न पायो ॥९॥

९९ राग ईमन ताल जलद तेताला

भवानी तारनी तारा भई सुरहेतु बन बासी हतो खल वृंद को बन में कियो नरचरित नये खाशी १ सुजन सुग्रीव दुख मेटो बँधायो सेतु जलराशी २ बहुरि संग्राम करि लंका सकल दशकंध बल नाशी ३ बहुरि फिरि आय रजधानी बिबिधि महि धर्म परकाशी ४ कहे सुरसुवन गुण गाये हरत यमराज की फाशी ॥५॥

१०७ राग ईमन ताल जल्द तेताला

जगत जननि रानी शिव जाया होहु प्रसन्न हरनि १ आरत को विश्वे श्वरि महिं माया १ विश्वेशी सब विश्व पालिनी तुमही विश्व उपाया भूमि रूप तुम सब के आश्रय सकल विश्व पर छाया २ जलस्वरूप रसरूप धातु है सकल भूमि पर छाया जलथल बन गिरि सरि सरिता पति सकल बसहिं तव काया ३ मोह लोभ हट क्षुधा पिपास तन पापिन्ह घर कहलाया दे वसुवन लक्ष्मी सुकृतिन्ह घर बसनी पुराणहु गाया ॥४॥

१०८ राग इमन ताल जल्द तेताला

भजु मन तुलसी नाम सुहाये जो जग माहिं निरंतर पूजित ताते जग पूजिता कहाये १ तुलसी वृक्ष भेद जे जग में ताके पाप पहार नशाये जेहि आँगन में शोभित तुलसी ता घर कबहुं दरिद्र न जाये २ जिन्ह बिनु अमित भाँति पूजा नित किये विष्णु संतुष्ट न पाये केवल जल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुलसीदल दीन्हें इक्त भक्तऊर सब सुख छाये ३ जो तुल
सी के वारि अंग निज छीरि देत जर श्री स्यन वाये देवी-
सुवन सो अनघ होत है मानो तीर्थ समस्त नहाये ॥४॥

१०२ राग एमन ताल जल्द तेताला

सुरगण सों सेवित पद जाके १ श्रीधर श्री आरा-
दा अनुकूल कहत महातम विधिवत गाके २ तु-
लसी सेइ सकल बांछित फल होत सिद्धि नर कहं
बिनु थाके ३ जापर करत कृपा करुणा मयिहैं तसक-
ल सुख जन वसुधा के ४ देवसुवन तुलसी बिनु सेवे मि-
लतन कृष्ण भक्ति सुख छाके ॥५॥

१०३ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

श्रीतुलकुमारी तव गति न्यारी अब सुधि लीजे हे हमा-
री नहिं जप तप नहिं ज्ञान ध्यान कछु नहिं तीरथ ब्रत
नियम संवारी १ शुद्धि अशुद्धि विवेक न जानो नहिं
जानो श्रुति तत्व तुम्हारी केवल आश्रु नाम के तेरो
हम पांवर तुम तारन वारी २ पतित उधारन नाम ख्यात
जग जो यह सत्य कथित श्रुति चारी तौ सुरलत्वन के
दुख मेटो करुणा सागर प्रभु पियारी ॥३॥

१०४ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

हरहु सकल भव ताप संतारनि देवन पालि दनुज द
राइ करि कियो सुख पंथ जनन हितकारिणि १ दीन

दयानी दुरित दारिणी दुति देति दुरा पवित्र हित जन-
पालिनि दुष्ट प्रचंड खल प्रहारिणि सुर संत सुधा-
दनि जग यश कारिनि २ कंज सुचारु चरण मौलि
वर सुधाकर धारिणि मृग रिपु वाहिनि मागत भ-
क्ति चरण कंज महँ सदा तव देह सुर सुवन तारिणि ३

१०५ राग बसन्त ताल जल्द तेताला

चेतहु चित काली चरण कंज आनन्द कन्द सुर मंजु
पुंज चपला सुचंद्र दुति चोर चुंबु बिधि बिबिधि वि-
न करि सदन सत्तु अज्ञान घन तम प्रकाश भानु
दुख विपिनि दहन समुदित कृशानु १ हरिहर वि-
रंचि हृदय वासित धाम सुर असुर मनुज कृत प्रात
प्रणाम भव दुर्ग जलधि कृत सुगम पार बरतरणि
वेद बिधि बिहित सार २ शुचि वरण चारु सुख मा
अगार हृत दुराचार महिमा अपार अणिमादि सि-
द्धि नव निधि निदान सुरराज मुकुट थित अति प्र-
धान ३ द्विज कुल कमल राज के दिवाकर निज म-
न कुमुद समुदित निशाकर याचत नृपति कुल
देव नन्दन बसत हृदय मम सुताप कंदन ॥४॥

१०६ राग काफ़ी चैत ताल जल्द तेताला

दुर्गा दयानी देवी दुर्गति हरु मेरी भवानी १ बलि
होम मंगल पूजा करि हो जगदानी शिवानी २ कर

देवो कंचनचुरिश्रा कुराडल दोनो कानस्तड़ानी ३ शि-
र सोनाके छत्र चढ़ैहो गल मुक्ता के हार मयानी ४ कर
जोरि सुरनन्दन माये निज पद रुचि देहु शुभानी ॥५॥

१८७ रागदरबारी ताल झपताला

श्री कालि कंज सुचारु रुचि शुचि चरण भजु मन
कामदम् कलि कोटि कल्मष भंग करि जग कुंज
भगु विश्रामदम् १ सौभाग्य बहुविधि करण प-
दुत्तर चित्त ताप प्रणामदम् विधु कोटि किरण तु-
लित नखरुचि सेवि कवि पद प्रारदम् २ बुध वि-
बुध सेवित निगमगीत सुभीत भंजन भावदम
ब्रह्मादि हृदय सुधाम भूत विज्ञान वर अभिराम
दम ३ करफलितन्दय कुल देवनन्दन पठन्ति वि-
नय विरागदम मम हृदय पंकज बसत निशि दि-
न बिमल बिदित सुभाग्यदम ॥४॥

१८८

नीचे प्रकारसे अध्याय सम झना चाहिये अरु पूर्ण
अध्याय का अर्थ खुलासा तौरसे यानी अध्यायका
मतलब भाषा किया गया है

भजन संक्षेप दुर्गा राग झझोटी ताल जल्द तेताल

मार्कराडे मुनि परिडत ज्ञानी - द्विज सो बोले रह मृदु वानी
भाव पीजो रवि प्रिय नन्दन देवि किया अष्टम मनु वन्दन

तिनकीकथा सुनो द्विज मराडन सुरथ नरेश भयो
खलखराडन रिपुके प्रबल पराक्रम ताकी चलेबि
पिनिहय चढ़े एकाकी सो गय मेधा मुनि के आश्रम
पूछेव मायाचरित पराक्रम मुनि कहि माया त्रिभुव-
न पाली विधिहित जल महं प्रगटे काली हरिहि प्र-
बोधि प्रथम विधि पाली मधुकैटभ हनयो हिमवा-
ली अ०१ देवासुर रण दैत्य पराजित सुर सब गय
विधिसहित सुकाजित हरिहर सो विनयो बहु भांती
केहिविधि रहौं विबस दिन राती सब सुर कोपि बटोर
तेजबल कमला प्रगट हेतु बध खल दल सम्राम म-
हं छेदि असुर दल हरणी सुरको सुखित कीन्ह शुभकरणी
अ०२ गर्जि कोपि महिषासुर धायो मारि सकल
सुर दल बिचलायो तब कोपी सुर यूथ सयाना कुंभ
सहस भरि मद करि पाना चढ़ि दवाइ पद पटकि ध-
रणि तल प्रफुल सँभारि खल हनी बीच गल्ल हाहा
करत असुर दल भाजे सुमन वृष्टि करि सुरदल राजे
अ०३ शक्र आदि किय देवी बन्दन। जय देवी करि अ-
सुर निकन्दन तुम जग कारिणि पालिनि हारिणि
दैत्य बिदारिणि देव सुधारिणि बरणि प्रताप लहो कि
मि पारा हरिहर आदि सकल सुर हारा यहि विधि १
सुनि अस्तुति शुभवानी कहै अंतरहित रुद्रानी पुनि

प्रभाव बखानो महराजा जगदम्बा के कृत सुरकाजा
अ॰ ४ सानुज शुंभ भयो अभिमानी बलसे कीन्ह
सब सुर के हानी शुंभनिशुंभ पराजित सुरगण ग-
य सब मिलि हिमगिरिहि तत क्षण हरि माया की चरि
त बखानी ताही ते प्रगटी शिवरानी तिनकी ख-
ल सुनि सुन्दरताई तेहि लावन कहं दूत पठाई च-
गड मुण्ड कह पुनि खल पठवा आनहु शुंभ गर्भी
लकुल प्रभवा ताकहं उत्तर दीन्ह भवानी कहियो
खल सों यह मम बानी हम प्रण कठिन कीन
मति भोरी जो रण मम सम सो पति मोरी ॥
अ॰ ५ तब धूम्राक्षहि कहा सुरारी आनहु बोगि ना-
हि बहु मारी सो जा कहा गिरा धुम्रलोचन चल
नहिं तो करि हौं मद मोचन सुनि खल बचन कोप
करि माया करि तेहि भस्म कीन्ह सुर दाया
अ॰ ६ आयो चण्ड मुण्ड दल साजी भइ प्रचण्ड
कालीरण छाजी क्षण महं खंड मुदण्ड दनुजद-
ल खंडि चण्ड पुनि मुण्ड प्रबल खल सुरपा-
लिनि जग तारिणि माता चामुण्डा भइ त्रिभुवन ख्यात
अ॰ ७ चण्ड आदि गण घात निरखि रण आये को-
पि शुंभ बल तन क्षण छादित कियो चण्डका
गण को सहित सिंह काली दल जन को ब्रह्मादिक

की शक्ति सयानी करि सुरारि बध हेतु प्रयानी
आयो तहं दूक खल भट मानी गर्जित रक्तबीज रण
ठानी एक बिन्दु तिहि रक्त पतन से जनित कोटि भ
ट तन समरण से रुधिर प्रभव भट दैत्य बनाई
चामुण्डा पित रक्त सुखाई रक्त विहीन असुर
कहं काली पटकि धरणि तल शूलन घाली
अ-८ यह विचित्र सुनि कथा नरेशू पुनि पूछे मु-
निसे सदेशू रक्तबीज बध सुनि शुंभासुर सानुज
कहो कर्यो का आतुर कह मुनि शुंभ सबल र-
ण आयो तहं निशुंभ कर शूल चलायो सहित
शूल खल को पर चारि खड्ग छेदि गिरि धरणि पछारि
अ-९ निहत निशुंभ निरखि अति कोपा शुंभ सघ-
न शर से दल तोपा करि नभ प्रथम असुर रण भा-
री मुनिगण मन कहं विस्मयकारी देवदनुज कुल
न्दपहि पलनि में हनि उर शूल निपाति धरणि में शुंभ
निपात निरखि सब सुरगण बरषि सुमन हर्षित भे तन मन
अ-१० देवी हत किय सुर आराती विनय कीन सुर
गण बहु भांती जग कारिणि पालिनि संहारिणि नारा
यणि सब रूप प्रचारिणि यहि विधि अस्तुति सुनि
शुभवानी देइ वर सुरगण को रुद्रानी जब जब असु
र करहिं सुर हानी तब तब नाश करौं रिपु खानी —

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ·११ यह अस्तुति करि हैं जो मेरी बाधाओ मेतहों जनकेरी प्रान्ति पार यह सदा सुहाई रिपुक्षय कारण मंगल दाई सकल कुव्रत्त परा भव कारक पाठ नसे भ्रमादिक हारक यह मम चरित सुनै जो कानन सो जग रहै यथा पंचानन यह कहि हरि अगोचर माया भइ देखत देवन भिव जाया सो काली सब जग जन पाली पूजन ते नर दुख गण घाली —

अ·१२ न्टप यह चरित कहा देवी को इमि प्रभाव धारति जगती को सुनि के वचन सुरथ न्टप बर मुनि सरित समीर सू ऋ जपि बहु पुनि निराहार न्टप वै श्य विजित मन मूर्तिरची महो मय सुभतन धूपदीप बलि दान बिबिधि करि निज तन रुधिर दियो सो हस धरि इहि बिधि पूजन पाय भवानी बोली प्रगट भक्तजन जानी तू बर वैश्य होहु बुध जानी बहुरि राज्य नव न्टप रिपु हानी यहिं विधि द्विज वर पाय न्टप तिवर होइहै सावर्णी बुध मनु वर जगदम्बा यथा भाषा बन्दन कियो धाति सुर न्टप सुर नन्दन अ·१३

२·६ कवित्त

दुर्गाजी प्रसन्न हेतु अस्तुति अनेक ग्रंथ गीत औ कवित्त वेद बहु बिधि प्रमाणोहैं जाने बहु माने प्रधाने पुराने कवित्ता में बहु देवनका सेवान विधानेहैं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यातें हित कोविद कवीन्द्र धीर सम्मति लहि रची शुभ गीत यामें देवी गुण गाने हैं देवीजनजीवन की यंत्रजानि जाहिर करि न्टप कुल विख्यात देवनन्दन बखाने हैं १ बासर गुण अंक चन्द्र युक्त शुभसम्वत हूय मास ग्रीष्म वार मेल बिजया तिथि केतु के परी है समाप्ति पर बुधजन सो विनय मेरी गीत दोष शोधि पढ़े राखे मम सेतु के मुन्शी मनोहर विविधि विद्या विवेकपूर नवल किशोर पास पठये याहीहेतु के मुद्रित करि दियानि भो करौ प्रचार याके गुनगन यथा गान करें कबिजन निति चेतु के २

इतिश्री भजनमालासमाप्तिः

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

६२।९।६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri